Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

भूमंडलीकरण और स्त्री विमर्श

इंद्रा जैफ	शोधार्थी (हिन्दी), राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर.
डॉ. मीनाक्षी चौधरी	(सहायक आचार्य) राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर.

ABSTRACT:

भूमंडलीकरण में अनेक विषयों के साथ-साथ स्त्री-विमर्श के ज्वलंत मुद्दे को भी उठाया गया हैI स्त्री-विमर्श केवल एक सरहद तक नहीं वरन वैश्विक स्तर पर नारी चेतना, नारी स्वतंत्रता का आह्वान करना है । भूमंडलीकरण ने महिलाओं के जीवन मे कई सकारात्मक बदलाव लाये हैं, जैसे शिक्षा के अवसरों मे वृद्धि, रोजगार के नए अवसर और कानूनी अधिकारों की प्राप्तिI लेकिन इसके साथ ही इसने कई चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं । स्त्री-विमर्श के संदर्भ मे यह आवश्यक है कि महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा, रोजगार और सम्मान कि दिशा मे ठोस प्रयास किए जाएँI जब तक महिलाओं को समान अवसर और सम्मान नहीं मिलेगा तब तक भूमंडलीकरण का लाभ पूरी मानवता के लिए सार्थक नहीं हो सकता।

KEYWORDS:

भूमंडलीकरण, स्त्री-विमर्श, नारी चेतना ।

प्रस्तावना

भूमंडलीकरण 20 वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण घटना है, क्योंकि भूमंडलीकरण में अनेक विषयों के साथ-साथ स्त्री-विमर्श के ज्वलंत मुद्दे को भी उठाया गया हैI स्त्री-विमर्श केवल एक सरहद तक नहीं वरन वैश्विक स्तर पर नारी चेतना, नारी स्वतंत्रता का आह्वान करना है। पश्चिमी देशों मे स्त्री मुक्ति के आंदोलन हुए हैंI वैसे भूमंडलीकरण मीडिया पूंजीवाद एवं बाजारीकरण ने स्त्री को स्वालंबी बनाया तो वहीं उसके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह यथावत है, नारी को पुरुषों के बराबर सभी संवैधानिक व्यक्तिगत एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त है लेकिन फिर भी नारी को इन अधिकारों व उसके अपने जीवन पर भी अधिकार नही है। उसकी आजादी अधूरी आजादी लगती है । आज के आधुनिक काल मे जहां स्त्री-विमर्श अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुका है वहाँ वह उन पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर अपने लिए नए समाज, नए विचार की स्थापना कर रहा है। भारतीय समाज के बंधन को जो सदा से चले आ रहे थे, स्त्री उन्हें तोड़ते हुये आधुनिक काल मे अपनी नई पहचान बना रही हैI स्त्री-विमर्श साहित्य, समाज और संस्कृति में महिलाओं के अधिकारों की भूमिका और उनके संघर्षों को उजागर करने का प्रयास करता हैI यह विचारधारा उन सामाजिक संरचनाओं और रूढ़ियो को चुनौती देती है, जो महिलाओं को उनकी पूर्ण स्वतन्त्रता और समानता से वंचित करती है ।

स्त्री-विमर्श का अर्थ:-

स्त्री-विमर्श एक साहित्यिक और सामाजिक आंदोलन है जो महिलाओं की स्थिति उनकी समस्याओं और उनके अस्तित्व को समझने का प्रयास करता है,बल्कि उनके अधिकारों और उनके अस्थित्व को समाज में उचित स्थान दिलाने की वकालत करता है। स्त्री-विमर्श का उद्भव महिलाओं के प्रति होनेवाले भेदभाव, शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए हुआ है। महिलाओं को पारंपरिक रूप से घर और परिवार तक सीमित रखा गया, लेकिन शिक्षा, रोजगार और सामाजिक बदलाव ने उन्हें नहीं पहचान दिलाई । सावित्रीबाई फुले, रामबाई रानाडे, महादेवी वर्मा और इस्मत चुगताई जैसी विभूतिओं ने स्त्री-विमर्श को मजबूत किया, यह विमर्श न केवल महिलाओं के व्यक्तिगत जीवन मे बदलाव लाने का प्रयास करता है, बल्कि समाज मे सम्मानजनक स्थान बनाने का भी है। स्त्री-विमर्श घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, लेंगिंक असमानता और शोषण जैसी समस्याओं के समाधान का रास्ता सुझाता है। स्त्री-विमर्श का साहित्यिक क्षेत्र मे भी विशेष महत्व है। महादेवी वर्मा की कविताएं, अमृता प्रीतम के उपन्यास और इस्मत चुगताई की कहानियाँ महिलाओं की संघर्ष-शीलता और स्वाभिमान को उजागर करती है।

भूमंडलीकरण और स्त्री की स्थिति:-

भूमंडलीकरण ने महिलाओं के जीवन मे कई सकारात्मक बदलाव लाये हैं, जैसे शिक्षा के अवसरों मे वृद्धि, रोजगार के नए अवसर और कानूनी अधिकारों की प्राप्ति । लेकिन इसके साथ ही इसने कई चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं ।

1. आर्थिक स्वतंत्रता और रोजगार:- भूमंडलीकरण ने महिलाओं को रोजगार के नए अवसर प्रधान किए हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों और आईटी उधोगों मे महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। लेकिन ये अवसर शहरी और उच्च वर्ग की महिलाओं तक ही सीमित रहे हैं। ग्रामीण और निम्न वर्ग की महिलाओं के लिए यह प्रक्रिया शोषणकारी भी रही है। कारखानो और उधोगों मे कम वेतन पर महिलाओं से काम करवाया जाता है।

2. शिक्षा और स्वास्थ्य पर प्रभाव:- भूमंडलीकरण के कारण महिलाओं को शिक्षा के बेहतर अवसर मिल रहे हैं। लेकिन शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच मे वर्गीय और क्षेत्रीय असमानतायें अभी भी बनी हुई हैं। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों की महिलाएं आज भी इन बुनियादी सेवाओं से वंचित हैं।

3. संस्कृति और पारंपरिक भूमिकाएँ:- भूमंडलीकरण ने पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं को चुनौती दी है। महिलाओं ने अपने लिए नई पहचान बनाई है, लेकिन इसके साथ ही उपभोक्तावाद और आधुनिकता के नाम पर महिलाओं के शरीर को वस्तु के रूप मे प्रस्तुत करने की प्रवर्ती भी बढ़ी है।

4. महिला सशक्तिकरण के प्रयास:- भूमंडलीकरण के दौर मे महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के लिए कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों और संगठनों ने काम किया है। संयुक्त- राष्ट्र, सीईडीएडब्लू और अन्य संस्थाओं ने महिलाओं की स्थिति सुधारने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भूमंडलीकरण के साथ महिला अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान दिया गया है। संयुक्तराष्ट्र के सीईडीएडब्लू जैसे समझौते महिलाओं के सशक्तिकरण और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रभावी साबित हुए। बीजिंग सम्मेलन (1995) ने महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों को सुदृढ करने के लिए एक व्यापक मंच प्रधान किया।

5. सांस्कृतिक प्रभाव और विरोधाभास:- भूमंडलीकरण ने सांस्कर्तिक आधान-प्रधान को बढ़ावा दिया है। महिलाओं ने अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकाल कर नई पहचान बनाई। लेकिन इसके साथ ही उपभोक्तावाद और मीडिया के प्रभाव ने महिलाओं को वस्तु के रूप मे प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है। नाओमी वुल्फ़ की पुस्तक "द ब्यूटी मिथ" इस संदर्भ मे महिलाओं के वस्तुकरण की गहरी पड़ताल करती है।

भूमंडलीकरण के प्रभाव:-

1. महिलाओं का वस्तुकरण:- भूमंडलीकरण ने उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया, जिससे महिलाओं को मनोरंजन और विज्ञापन उधोग मे एक वस्तु के रूप मे पेश किया जाने लगा । भारत मे मीडिया अध्ययन से पता चलता है कि 70% विज्ञापन महिलाओं कि शरीरिक सुंदरता पर आधारित होते हैं।

2. सांस्कृतिक संघर्ष:- भूमंडलीकरण के प्रभाव ने परंपरागत और आधुनिकता के बीच संघर्ष पैदा किया। कई बार महिलाओं कि स्वतन्त्रता को उनके परिवार और समाज द्वारा गलत समझा जाता हैI अमर्त्य सेन ने अपनी पुस्तक "डेवलपमेंट फ्रीडम एज" मे बताया कि, महिलाओं कि स्वतंत्रता सामाजिक संरचनाओं के साथ कैसे संघर्ष करती है।

3. आर्थिक असमानता:- भूमंडलीकरण ने शहरी और ग्रामीण महिलाओं के बीच आर्थिक असमानता को बढ़ाया है। उच्च वर्ग कि महिलाओं को अधिक अवसर मिलते हैं, जबकि निम्न वर्ग कि महिलाएं अक्सर सस्ते श्रम तक सीमित रहती हैं। वर्ल्ड बैंक कि 2018 कि रिपोर्ट से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों मे महिलाओं का औसतन वेतन शहरी महिलाओं के मुक़ाबले काफी कम है। भूमंडलीकरण के चलते महिलाओं को रोजगार के अवसर तो प्राप्त हुआ लेकिन यह अवसर शोषणकारी साबित हुआ । महिलाओं को असंगठित क्षेत्रों और करखानों मे सस्ते श्रम के रूप मे काम पर रखा जाता है। उन्हें न्यूनतम वेतन और बुनियादी सुविधाएं भी नहीं मिलती। वैश्विक कंपनियाँ महिलाओं को अस्थाई और कम वेतन वाले कार्यों मे लगती है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन कि रिपोर्ट के अनुसार, विकाशशील देशों मे कामकाजी महिलाओं मे से 60% असंगठित क्षेत्रों मे हैं, जहां उन्हें श्रम अधिकार नहीं मिलते। बांग्लादेश और भारत के वस्त्र उधोगों मे काम करने वाली महिलाओं को अत्यधिक काम के बावजूद वेतन और सुविधाएं नहीं मिलती।

4. लैंगिक असमानता और भेदभाव:- कामकाजी महिलाओं के प्रति भेदभाव भूमंडलीकरण ने महिलाओं के कार्यक्षेत्र का विस्तार किया, लेकिन लैंगिक भेदभाव और असमान वेतन कि समस्या अब भी बनी हुई है। महिलाओं पर घर और कार्यस्थल दोनों कि ज़िम्मेदारी होती है, जिससे उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। भारत मे कामकाजी महिलाओं पर किए गए एक सर्वे ने दिकाया कि 75% महिलाएं दोहरी जिम्मेदारिओं के करण तनाव का अनुभव करती हैं।

निष्कर्ष:-

भूमंडलीकरण ने महिलाओं के जीवन मे कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, लेकिन साथ ही कई चुनौतियां भी पेश कि हैंI स्त्री-विमर्श के संदर्भ मे यह आवश्यक है कि महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा, रोजगार और सम्मान कि दिशा मे ठोस प्रयास किए जाएँ। जब तक महिलाओं को समान अवसर और सम्मान नहीं मिलेगा तब तक भूमंडलीकरण का लाभ पूरी मानवता के लिए सार्थक नहीं हो सकता।

REFERENCES

1. वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट (2018)
2. यूनिसेफ शिक्षा रिपोर्ट (2021)
3. अमर्त्य सेन - "डेवलपमेंट फ्रीडम एज"
4. https://www.drishtiias.com
5. https://pawanlyias.com